

प्रेषक,
रविनाथ रामन,
अपर सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,
आयुक्त,
खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग,
उत्तराखण्ड देहरादून।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति अनुभाग-2 देहरादून: दिनांक 13 जनवरी, 2015

विषय: उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली 2014 के प्रकाशन के सम्बन्ध में।

महोदय,

कृपया उपर्युक्त विषयक उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली 2014 का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद की प्रतियां संलग्न कर प्रेषित करते हुये मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि उक्त नियमावली सर्व साधारण के प्रकाशनार्थ विभागीय वेब साईट पर अपलोड (upload) करते हुये इसकी सूचना दो प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाते हुये, प्रकाशन से सम्बन्धित बीजकों का भुगतान करने का कष्ट करें।

संलग्न-यथोक्त

भवदीय,

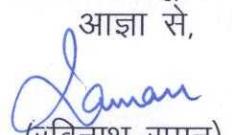
(रविनाथ रामन),
अपर सचिव।

संख्या / 15-XIX-2 / 46 खाद्य / 2013 तददिनांकित

प्रतिलिपि- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

- 1- महानिदेशक, सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड।
- 2- समन्वयक, एन0आई0सी0, सचिवालय परिसर, उत्तराखण्ड देहरादून।

संलग्न-यथोक्त

आज्ञा से,

(रविनाथ रामन),
अपर सचिव।

उत्तराखण्ड शासन
खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति अनुभाग-2
 संख्या 16 /15-XIX-2/46 खाद्य /2013
 देहरादून :दिनांक: 13 जनवरी, 2015
अधिसूचना

चूंकि विष अधिनियम, 1919 (केन्द्रीय अधिनियम सं० 12 वर्ष 1919) की धारा 8 द्वारा अधिनियम के प्रयोजनों और उद्देश्यों को साधारणतया क्रियान्वित करने के लिए नियम बनाने की शक्ति राज्य सरकार में निहित है;

और चूंकि अधिनियम के क्रियान्वयन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष में नियम बनाये जाने आवश्यक हो गए हैं;

और चूंकि उक्त धारा 8 की उपधारा (2) में नियमों के पूर्व प्रकाशनाधीन बनाए जाने की अधिकारिता प्रदान की गई है;

अतः अब, राज्यपाल, उत्तराखण्ड राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र में विष के थोक या फुटकर विक्रयार्थ कब्जे और विक्रय को निम्नवत नियमों द्वारा विनियमित किए जाने के प्रयोजनों और उद्देश्यों के लिए पूर्व प्रकाशित करते हैं और यह निर्दिष्ट करते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को इन नियमों के लिए कोई आपत्ति हो तो इसके प्रकाशन की तारीख से 30 दिन के भीतर प्रमुख सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, उत्तराखण्ड सचिवालय, सुभाष रोड, देहरादून-248001 के कार्यालय में डाक द्वारा उपलब्ध करा सकते हैं, इसके उपरान्त किसी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जाएगा और प्रस्तावित नियमों को अंतिम रूप से प्रकाशित कर दिया जाएगा—

उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली. 2014

- | | | |
|---|---|--|
| संक्षिप्त शीर्षक,
विस्तार एवं प्रारम्भ | 1 | (1) इस नियमावली का संक्षिप्त नाम उत्तराखण्ड विष (कब्जा व विक्रय) नियमावली, 2014 है।
(2) इसका विस्तार संपूर्ण उत्तराखण्ड राज्य में होगा।
(3) यह गजट में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होगी। |
| परिभाषाएं | 2 | (1) जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, इस नियमावली में—

(क) “अधिनियम ” से अभिप्रेत विष अधिनियम 1919 (1919 का 12वां अधिनियम) है;
(ख) “व्यवहारी ” से इन नियमों के अधीन अनुज्ञप्ति धारक व्यक्ति अभिप्रेत है;
(ग) “प्रपत्र ” से इस नियमावली से संलग्न प्रपत्र अभिप्रेत है;
(घ) “अनुज्ञापी ” से अनुज्ञप्ति धारक अभिप्रेत है;
(ङ) “अनुज्ञापन ” प्राधिकारी से जिलाधीश या कोई अन्य ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जिसे धारा 7 की उपधारा (1) के अधीन राज्य |

सरकार द्वारा अनुज्ञप्ति प्रदान करने के लिए अधिकृत किया गया है;

- (च) “अधिसूचना ” से उत्तराखण्ड के गजट में प्रकाशित अधिसूचना अभिप्रेत है;
- (छ) “विक्रय ” से एक अनुज्ञप्ति धारक व्यवहारी द्वारा किसी अनुज्ञप्ति धारक या किसी विद्यालय अथवा महाविद्यालय को या किसी शोध या चिकित्सा संस्था या चिकित्सालय को या ऐसे औषधालय को जो किसी पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी या किसी ऐसी मान्यता प्राप्त सार्वजनिक संस्था या औद्योगिक फर्म को जिसे अपने निजी प्रयोग के लिए विष की आवश्यकता हो या सरकारी विभागों या सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठान को या व्यक्तिगत प्रयोग के लिए किसी व्यक्ति को किया गया कोई भी विक्रय अभिप्रेत है; तथा
- (ज) “अनुसूची ” से इस नियमावली से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है।

(2) इस नियमावली में प्रयुक्त ऐसे शब्द व अभिव्यक्तियों किन्तु जिन्हें उपनियम (1) के अधीन परिभाषित नहीं किया गया है, वही अर्थान्वयन होगा जैसा अधिनियम में उनके लिए दिया गया है।

विष के रूप में मान्य पदार्थ	3	अनुसूची में विनिर्दिष्ट पदार्थों को अधिनियम व इस नियमावली के प्रयोजन के लिए विष समझा जाएगा।
कब्जे या विक्रय के लिए अनुज्ञप्ति	4	प्रारूप एक में दिये गये अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा इस निमित्त प्रदत्त या नवीनीकृत अनुज्ञप्ति धारण करने वाले व्यक्ति से भिन्न कोई भी व्यक्ति जिसे अधिनियम के अधीन छूट प्राप्त न हो, न तो विष का विक्रय करेगा और न ही विक्रय के प्रयोजनार्थ अपने पास रखेगा।
परिसर पर नियमों का प्रदर्शन	5	अनुज्ञप्तिधारक नियम 4 के अधीन स्वीकृत अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट व्यापार स्थल पर किसी प्रमुख स्थान में इन नियमों की एक प्रति सदैव प्रदर्शित करेगा।
अनुज्ञप्ति की स्वीकृति या नवीनीकरण के लिए आवेदन	6	<p>(1) अनुज्ञप्ति लेने या उसके नवीनीकरण के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति अनुज्ञापन प्राधिकारी को प्रपत्र 2 में लिखित आवेदन करेगा तथा ऐसे आवेदन के साथ सौ रुपये के मूल्य का न्यायालय शुल्क स्टॉप वहन करेगा।</p> <p>परन्तु यह कि ऐसे अनुज्ञप्ति के नवीनीकरण के लिए कोई आवेदन, जो अनुज्ञप्ति के अवसान की</p>

		<p>तारीख से तीन माह से कम अवधि पूर्व किया जाये तो अनुज्ञप्ति धारक पांच सौ रुपये के मूल्य का न्यायालय शुल्क स्टांप वहन करेगा।</p> <p>(2) अनुज्ञप्ति की मूलप्रति खोने या नष्ट होने पर अनुज्ञप्ति की द्वितीय प्रति प्राप्त करने के लिए अनुज्ञप्ति धारक लिखित रूप में आवेदन करेगा तथा पांच सौ रुपये का न्यायालय शुल्क स्टांप वहन करेगा।</p> <p>(3) अनुज्ञप्ति धारक के व्यापार स्थल में किसी परिवर्तन की दशा में अनुज्ञप्ति के लिए अनुज्ञापन प्राधिकारी को नया आवेदन करेगा और ऐसे आवेदन पर पांच सौ रुपये का न्यायालय शुल्क का स्टांप वहन करेगा।</p> <p>(4) अनुज्ञप्ति धारक अनुज्ञप्ति को व्यापार स्थल पर प्रमुख रूप से प्रदर्शित करेगा।</p>
अनुज्ञप्ति की अवधि	7	<p>नियम 8 व 9 के उपबंधों के अधीन रहते हुए इस नियमावली के अधीन प्रदत्त या नवीनीकृत अनुज्ञप्ति उसके जारी होने की तारीख से पांच वर्ष तक प्रवृत्त रहेगी।</p>
अनुज्ञापन प्राधिकारी के विवेकाधिकार	8	<p>(1) अनुज्ञप्ति को कभी भी निरस्त या प्रतिसंहत किया जा सकेगा।</p> <p>(2) अनुज्ञप्ति को प्रदत्त किया जाना या उसका नवीनीकरण या निरस्तीकरण या प्रतिसंहरण अनुज्ञापन प्राधिकारी के विवेकाधीन होगा जिसका निर्णय अंतिम होगा,</p> <p>परन्तु यह कि अनुज्ञापन प्राधिकारी संबंधित पक्षकार को प्रस्तावित कार्यवाही के विरुद्ध कारण, यदि कोई हो, बताने का अवसर प्रदान करेगा और वह अनुज्ञप्ति प्रदत्त किये जाने या उसके नवीनीकरण करने से अस्वीकृत करने या अनुज्ञप्ति को निरस्त करने या प्रतिसंहत करने के कारण को लिखित रूप में अभिलिखित करेगा।</p> <p>परन्तु यह और कि आवेदक जिसे अनुज्ञप्ति दिया जाना अस्वीकृत किया गया हो या अनुज्ञप्ति धारक जिसकी अनुज्ञप्ति निरस्त या प्रतिसंहरित की गई हो तथा जो अनुज्ञापन प्राधिकारी के किसी आदेश से व्यथित हो, वह राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित अपीलीय प्राधिकारी के समक्ष अपील योजित कर सकेगा।</p>
अनुज्ञप्ति का पर्यवसान	9	<p>अनुज्ञप्ति धारक की मृत्यु होने या उसके व्यापार के अंतरित होने पर, या यदि अनुज्ञप्ति धारक फर्म या कंपनी हो तो उस फर्म या कंपनी के समापन पर या उसके द्वारा किए जा रहे व्यापार के अंतरण की दशा में अनुज्ञप्ति का पर्यवसान हो जाएगा।</p>

परंतु यह कि अनुज्ञप्ति धारक के रूप में यदि ऐसी फर्म या कंपनी के व्यापार को चालू समुत्थान के रूप में अंतरित कर दिया गया है और हस्तांतरी नई अनुज्ञप्ति के लिए अंतरण की तिथि के चौदह दिनों के भीतर सौ रुपये के न्यायालय शुल्क स्टॉप के साथ आवेदन करता है तो विद्यमान अनुज्ञप्ति तब तक प्रवृत्त रहेगी जब तक कि नई अनुज्ञप्ति प्रदत्त नहीं कर दी जाती है या नई अनुज्ञप्ति के लिए अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा आवेदन अस्वीकृत न कर दिया जाए।

अनुज्ञप्ति के
प्रतिसंहरण, पर्यवसान
या निरस्त होने पर
स्टॉक का निस्तारण

10

- (1) नियम 8 के अधीन अनुज्ञप्ति के प्रतिसंहरित या निरस्त होने की दशा में या नियम 9 के अधीन अनुज्ञप्ति के पर्यवसान होने की दशा में, विष के स्टॉक को किसी अन्य अनुज्ञप्ति धारक को अनुज्ञप्ति के ऐसे प्रतिसंहरण, पर्यवसान या निरस्तीकरण होने की तिथि से तीन माह के भीतर विक्रय किया जा सकेगा। तत्पश्चात् अनुज्ञापन प्राधिकारी के आदेशानुसार अवशिष्ट विष को नष्ट कर दिया जाएगा।
- (2) नियम 9 के अधीन संदर्भित मामले में पर्यवसान की दशा में विक्रय के आगम यदि कोई हो, यथास्थिति, मृतक अनुज्ञप्ति धारक के विधिक प्रतिनिधि को विघटित की गई फर्म या कंपनी के परिसमापक या उसके हस्तांतरिती जैसा भी हो, को हस्तांतरित कर दिये जाएंगे।

विष या पंजिकाओं के
निरीक्षण की शक्ति

11

कोई कार्यकारी मजिस्ट्रेट या संबंधित पुलिस थाने के उप-निरीक्षक के स्तर का या उससे उच्च अन्य कोई पुलिस अधिकारी या राज्य सरकार द्वारा नियुक्त कोई चिकित्साधिकारी या औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 (वर्ष 1940 की अधिनियम संख्या 23) की धारा 21 के अधीन नियुक्त कोई निरीक्षक अनुज्ञप्ति धारक के उस स्थल में प्रवेश और निरीक्षण कर सकेगा जहां पर विष को विक्रय हेतु रखा गया है और वहां पर स्थित सभी प्रकार के विष व पंजिकाओं का निरीक्षण कर सकेगा।

उप नियम (1) में उल्लिखित अधिकारियों द्वारा किसी भी अनुज्ञप्ति प्राप्त परिसर में या किसी भी अन्य स्थान पर विष का कोई भी अघोषित संग्रहित स्टॉक पाये जाने पर उसे जब्त किया जा सकेगा तथा नियम 19 के अधीन दण्ड के अतिरिक्त, मजिस्ट्रेट द्वारा ऐसे अनुज्ञप्ति धारक जिसके पास यह अघोषित स्टॉक था पर तत्काल ही रुपये 50,000 तक का अर्थदण्ड भी अधिरोपित किया जा सकेगा।

अनुज्ञप्ति जिन्हें दी जा सकेगी	12	<p>(1) अनुज्ञप्ति केवल ऐसे व्यक्ति को दी जाएगी जो अनुज्ञापन प्राधिकारी की राय में विष का व्यापार संचालित करने में सक्षम हो।</p> <p>(2) किसी फर्म या कंपनी को प्रदत्त की गई अनुज्ञप्ति सदैव फर्म या कंपनी के स्वत्वधारी या स्वत्वधारियों अथवा स्वत्वधारी या स्वत्वधारियों द्वारा इस प्रयोजन हेतु नामित उत्तरदायी व्यक्ति या किसी सार्वजनिक कंपनी के मामले में उसके प्रबंधक के ही नाम पर जारी होगी।</p> <p>(3) इस प्रकार दिये गये नाम या नामों को फर्म या कंपनी के लिखित आवेदन पर अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा परिवर्तित या संशोधित किया जा सकेगा और अनुज्ञप्ति धारक ऐसे आवेदन के साथ सौ रुपये मूल्य के न्यायालय शुल्क स्टॉप वहन करेगा।</p>
विष का विक्रय	13	<p>(1) विष का प्रत्येक विक्रय, यथासंभव रूप से अनुज्ञप्ति धारक द्वारा व्यक्तिगत रूप से या जहां अनुज्ञप्ति धारक फर्म या कंपनी हो, वहां उस फर्म या कंपनी के अधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से या उसके पर्यवेक्षण में ही किया जाएगा।</p> <p>(2) इस नियमावली के अधीन विष के कब्जे तथा उनके विक्रय हेतु अनुज्ञप्ति धारक अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट परिसर में ही विष का संग्रह तथा विक्रय करेगा।</p>
व्यक्ति जिन्हें विष का विक्रय किया जा सकेगा	14	<p>(1) कोई अनुज्ञप्ति धारक, किसी एकल व्यक्ति को तब तक किसी प्रकार के विष का विक्रय नहीं करेगा जब तक कि वह व्यक्ति साक्षी के रूप में न्यूनतम एक साथी के साथ न उपस्थित न हो जो विष के क्रय का उद्देश्य बता सके।</p> <p>(2) अनुज्ञप्ति धारक क्रेता को व्यक्तिगत रूप से जानता हो या उसके द्वारा प्रस्तुत फोटोयुक्त पहचान पत्र, जिसमें उसका पता अंकित हो या किसी अन्य दस्तावेज पर उसका पता दर्ज हो, के माध्यम से उसकी पहचान संतोषजनक रूप से करे।</p> <p>(3) विष के विक्रय से पूर्व अनुज्ञप्ति धारक के लिए क्रेता तथा साक्षी का नाम, दूरभाष संख्या तथा पते को अभिनिश्चित करना तथा विष के क्रय के उद्देश्य को ज्ञात करना आवश्यक होगा।</p> <p>(4) अनुज्ञप्ति धारक किसी ऐसे व्यक्ति को विष विक्रय नहीं करेगा जो उसे 18 वर्ष से कम की आयु का प्रतीत होता हो या उसकी राय में जिसका अपने मन व शरीर पर पूर्ण नियंत्रण न होना प्रतीत होता हो।</p>

विष के विक्रय की
पंजिका

15

- (1) प्रत्येक अनुज्ञप्ति धारक एक पंजिका का अनुरक्षण करेगा जिसमें वह सिवाय ऐसे विष के जो किसी अहर्ता-प्राप्त चिकित्साधिकारी या पशु-चिकित्साधिकारी के औषधि-निर्देश के अनुसरण में किसी रसायनज्ञ, दवा-विक्रेता या औषध-संयोजक द्वारा प्रयुक्त, वितरित या सुमिश्रित किया जाए, विष के सभी प्रकार के विक्रय को सही प्रकार से प्रविष्ट करेगा।
- (2) ऐसी पंजिका में ऐसे विक्रय के संबंध में निम्न विवरण दर्ज किए जाएंगे, अर्थात् –
 - (क) क्रम संख्या
 - (ख) विष का नाम
 - (ग) विक्रित मात्रा
 - (घ) विक्रय की तिथि
 - (ङ.) क्रेता का नाम एवं पता, उसके द्वारा प्रस्तुत फोटो पहचान पत्र की संख्या तथा पहचान पत्र निर्गत करने वाले प्राधिकारी का नाम
 - (च) अपेक्षित विष के क्रय के लिए क्रेता द्वारा बताया गया प्रयोजन
 - (छ) क्रेता के हस्ताक्षर (या निरक्षर हो तो निशानी अंगूठा) या डाक द्वारा क्रय की दशा में, किस तिथि को पत्र लिखा गया है तथा उस मूल पत्रावली का संदर्भ जिसमें उसे सुरक्षित रखा गया है।
 - (ज) साक्षी का नाम एवं पता, साक्षी के हस्ताक्षर (या निरक्षर हो तो निशानी अंगूठा), उसके द्वारा प्रस्तुत फोटो पहचान पत्र की संख्या तथा पहचान पत्र निर्गत करने वाले प्राधिकारी का नाम और अपेक्षित प्रयोजन
 - (झ) क्रेता तथा साक्षी का डिजिटल फोटो, और
 - (ञ) व्यवहारी के हस्ताक्षर
- (3) पंजिका के एक पृथक भाग में प्रत्येक विष के लिए पृथक स्तंभ में प्रतिदिन विक्रित प्रत्येक विष की मात्रा को प्रविष्ट किया जाएगा व इन प्रविष्टियों को प्रतिदिन भरा जाएगा।
- (4) उप-नियम (2) के अधीन मद (ञ) में विनिर्दिष्ट पंजिका में हस्ताक्षर अनुज्ञप्ति धारक के या जहां अनुज्ञप्ति धारक कोई फर्म या कंपनी हो, हस्ताक्षर ऐसी फर्म या कंपनी के अधिकृत प्रतिनिधि के होने चाहिए तथा विक्रय के समय या माल प्रेषण करते समय अंकित किए जाएंगे
- (5) ऐसे हस्ताक्षर से यह इंगित होगा कि हस्ताक्षरकर्ता ने इस बात की संतुष्टि कर ली है कि नियम 14 की अपेक्षाओं को पूर्ण कर लिया गया है।
- (6) उप नियम (2) के अधीन मद (छ) में संदर्भित सभी

पत्र या लिखित आदेश अनुज्ञप्ति धारक द्वारा मूल रूप में विक्रय की तिथि से न्यूनतम दो वर्षों की अवधि के लिए सुरक्षित रखे जाएंगे।

विष के स्टॉक की पंजी

16

- (1) अनुज्ञप्ति धारक प्रत्येक विष से संबंधित स्टॉक पंजिका अनुरक्षित करेगा जिसमें निम्न विवरण होंगे, अर्थात् –
 - (क) क्रम संख्या
 - (ख) तिथि
 - (ग) प्राप्त मात्रा
 - (घ) जिस व्यक्ति से प्राप्त किया, उसका नाम व पता
 - (ङ.) विक्रित मात्रा
 - (च) स्टॉक की अतिशेष मात्रा, और
 - (छ) टिप्पणी
- (2) अनुज्ञप्ति धारक प्रत्येक माह के अंत में निकटस्थ पुलिस थाने को निम्न विवरणों की सूचना देगा, अर्थात् –
 - (क) प्रत्येक माह के आरम्भ में विभिन्न विषों का आरंभिक अतिशेष,
 - (ख) माह के दौरान प्रत्येक क्रेता को विक्रित मात्रा का विवरण तथा प्रयोजन,
 - (ग) क्रेता तथा साक्षी के नाम एवं पता, और
 - (घ) माह के अंत में विभिन्न विषों के अतिशेष स्टॉक का विवरण
- (3) स्टॉक से किसी भी दिन खुदरा विक्रय के लिए जारी विष तथा औषधि निर्देशों के आधार पर जारी विष स्टॉक को पंजिका में एक मद की भांति इससे संबंधित टिप्पणी के साथ प्रविष्ट किया जाएगा।
- (4) विभिन्न संस्थाओं को औद्योगिक उपयोग या प्रयोगशाला में उपयोग हेतु जारी विष के संबंध में उन संस्थाओं के प्रमुखों को विष का उचित उपयोग तथा यह भी सुनिश्चित करना होगा कि विष की किसी भी मात्रा की चोरी न हो पाए।
- (5) स्टॉक पंजिका में प्रतिदिन स्टॉक की अतिशेष मात्रा की प्रविष्टि की जाएगी।

विक्रय हेतु रखे गए विष की अभिरक्षा और उन पात्रों पर लेबल (अंकितक) लगाना जिनमें विष रखे गए हों

17

- (1) इस नियमावली के अधीन किसी भी अनुज्ञप्ति धारक द्वारा विक्रय हेतु रखे गए सभी विष किसी बक्से, अलमारी, कक्ष या भवन में (रखी गई मात्रा के अनुसार) सुरक्षित रखे जाएंगे जो ताले और चाबी द्वारा सुरक्षित किए जाएंगे और जिनमें अधिनियम के अधीन प्रदत्त अनुज्ञप्ति के अनुसार रखे गए विष के अतिरिक्त कोई अन्य पदार्थ नहीं रखा जाएगा तथा प्रत्येक विष को पृथक रूप से शीशे, प्लास्टिक, धातु

या मिट्टी के बंद पात्रों में सुरक्षित रूप से रखा जाएगा।

- (2) ऐसे प्रत्येक बक्से, अलमारी, कक्ष या भवन और ऐसे प्रत्येक पात्र में लाल अक्षरों में अंग्रेजी में “POISON” तथा स्थानीय भाषा में विष अंकित होगा तथा पृथक विष युक्त पात्रों पर विषों का नाम अंकित किया जाएगा।

विक्रय किए गए विष 18
की सुरक्षित पैकिंग
करके लेबल लगाना

जब भी किसी विष का विक्रय किया जाए, उसे एक बंद पात्र या कंटेनर (मात्रा के अनुसार) में अनुज्ञप्ति धारक द्वारा सुरक्षित रूप से पैक किया जाएगा तथा उस पर लाल लेबल लगाया जाएगा जिसमें अंग्रेजी व स्थानीय भाषा में विष का नाम और अनुज्ञप्ति धारक का नाम एवं पता अंकित किया जाएगा। पात्र पर निम्न सार्वभौमिक प्रतीक चिह्नों को भी प्रदर्शित किया जाएगा।



प्रयोक्ता द्वारा (सिवाय 19
व्यक्तियों के) द्वारा
एसिड (अम्ल) /
संक्षारक पदार्थों की
सुरक्षा, भंडारण व
घटना प्रबंधन

प्रयोक्ता द्वारा एसिड / संक्षारक पदार्थों की सुरक्षा, भंडारण और घटना प्रबंधन के लिए किए गए उपायों को रेखांकित करते हुए एक मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार कर प्रयोक्ता के परिसर में प्रमुख रूप से प्रदर्शित किया जाएगा।

- (1) एसिड / संक्षारक पदार्थों की सुरक्षा,
- (क) परिसर में एसिड के कब्जे और सुरक्षित रूप से रख-रखाव के लिए किसी एक व्यक्ति को उत्तरदायी बनाया जाएगा।
 - (ख) एसिड / संक्षारक पदार्थों का भंडारण उक्त व्यक्ति के पर्यवेक्षण में किया जाएगा।
 - (ग) अधिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एसिड / संक्षारक पदार्थों का भंडारण दोहरे ताला प्रणाली के अंतर्गत किया जाएगा।
 - (घ) एसिड / संक्षारक के उपयोग की पंजिका अनुरक्षित की जाएगी तथा उसे प्रत्येक तिमाही में संबंधित उप-खंड मजिस्ट्रेट (या जहां पर उप-खंड मजिस्ट्रेट का कार्यालय न हो, तहसीलदार) को प्रस्तुत किया जाएगा।
 - (ङ.) ऐसी प्रयोगशालाओं / भंडारण स्थलो, जहां एसिड / संक्षारकों को रखा गया हो, से बाहर जा रहे छात्रों / कार्मिकों की अनिवार्य

रूप से जांच की जाएगी।

(2) एसिड / संक्षारकों का भंडारण—

- (क) रसायनों को प्लास्टिक या किसी अन्य प्रकार के उपयुक्त पात्रों में भंडारित किया जाएगा।
- (ख) सभी भंडारण पात्रों पर रसायनों की पहचान और उनमें अंतर्निहित जोखिमों तथा बरती जाने वाली सावधानियां उल्लिखित करते हुए लेबल लगाए जाएंगे।
- (ग) परस्पर विरोधी रसायनों (असंयोज्य) का भंडारण एक साथ नहीं किया जाना चाहिए।
- (घ) संक्षारक रसायनों का भंडारण न्यूनतम मात्रा में किया जाना चाहिए।
- (ङ) जहां भी उपयुक्त हो, वहां सुरक्षात्मक दस्ताने, एप्रन, सुरक्षात्मक चश्में व चेहरे के कवच (फेस शील्ड) पहने जाने चाहिए।
- (च) एसिड का तनुकरण सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, सदैव जल में एसिड मिलाया जाना चाहिए, एसिड में जल कभी नहीं मिलाएं।

(3) घटना प्रबंधन—

1. **त्वचा संपर्क—** संदूषित वस्त्रों, जूतों व चमड़े की वस्तुओं (घड़ी का फीता, बेल्ट आदि) को तुरंत उतार दें। शीघ्रतापूर्वक और कोमलता के साथ लगे हुए अतिरिक्त रसायन को झाड़ दें या मिटा दें। तुरंत ही गुनगुने व मंद गति से बहते पानी के साथ कम से कम 30 मिनट तक धोएं। धुलाई को बीच में न रोकें। यदि सुरक्षित रूप से संभव हो तो चिकित्सालय जाते समय भी धोना जारी रखें। तुरंत ही विष निदान केन्द्र या चिकित्सक से संपर्क करें। चिकित्सीय उपचार अत्यंत आवश्यक है। चिकित्सालय जाने के लिए वाहन की व्यवस्था करें।
2. **नेत्र संपर्क—** सीधे संपर्क से बचें। यदि आवश्यक हो तो रसायन से बचाव हेतु दस्ताने पहनें। तुरंत ही कोमलता के साथ चेहरे से रसायन को झाड़ दें या मिटा दें। तुरंत ही दूषित नेत्रों को पलक खुली रखते हुए गुनगुने व मंद गति से बहते पानी से कम से कम 30 मिनट तक धोएं। यदि कॉन्टेक्ट लेंस लगाएं हों तो नेत्र धोने तथा कॉन्टेक्ट लेंस हटाने के प्रयास में देरी न करें। उपलब्ध होते ही यथाशीघ्र न्यूट्रल सेलाइन सॉल्यूशन का उपयोग करें। नेत्रों की धुलाई को बीच में न रोकें। यदि आवश्यक हो तो चिकित्सालय जाते समय भी धुलाई जारी रखें।
3. **अंतर्ग्रहण (इन्जेक्शन)—** पीड़ित व्यक्ति के मुख को

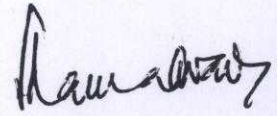
पानी से धुलवाएं, यदि प्राकृतिक रूप से उलटी आए तो श्वसन क्रिया पर जोखिम कम करने के लिए पीड़ित को आगे झुका दें। पीड़ित के मुख को फिर पानी से धुलवाएं। शीघ्र ही विष निदान केन्द्र या चिकित्सक से संपर्क करें। यदि चिकित्सीय उपचार की तत्काल आवश्यकता है तो पीड़ित को किसी चिकित्सालय ले जाएं।

4. **अंतःश्वसन (इन्हेलेशन)**— बचाव के उपाय करने से पूर्व स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सावधानियां बरतें (उदाहरण के रूप में सुरक्षात्मक उपकरण पहनें)। पीड़ित को ताजा हवा में ले जाएं। श्वसन के लिए आरामदायक स्थिति में आराम करने दें। यदि श्वसन में कठिनाई हो तो प्रशिक्षित कार्मिकों द्वारा उसे आपात ऑक्सीजन दें। पीड़ित को अनावश्यक रूप से इधर उधर न घूमने दें। फेफड़ों में सूजन के लक्षण विलंब से प्रकट हो सकते हैं। तुरंत ही विष निदान केन्द्र या चिकित्सक से संपर्क करें। चिकित्सीय उपचार की अत्यावश्यकता है। तुरंत ही चिकित्सालय ले जाएं।

शास्ति

20

- (1) अधिनियम अथवा इस नियमावली के किसी प्राविधान का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति विष अधिनियम की धारा 6 के अधीन दंड का भागी होगा।
- (2) उप नियम (1) के अधीन प्राविधानित शास्ति के अतिरिक्त संबंधित उप-खंड मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्ति पर रुपये 50,000 तक का अर्थ-दंड भी अधिरोपित कर सकता है जिसने किसी भी उपर्युक्त नियम का उल्लंघन किया हो।



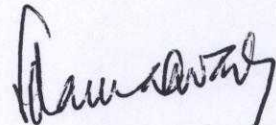
(एस0 रामास्वामी)

प्रमुख सचिव

21. अनुसूची

(उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली 2014 के नियम 2 व 3 देखें)
विष की सूची

क्रम संख्या (1)	पदार्थ का नाम (2)
1.	ऐसिटिक एसिड (भार में 25 प्रतिशत की सांद्रता से अधिक)
2.	ऐसिटिक एनहाइड्राइड
3.	सल्फ्यूरिक एसिड (H_2SO_4) (भार में 5 प्रतिशत की सांद्रता से अधिक)
4.	हाइड्रोक्लोरिक एसिड (HCl) (भार में 5 प्रतिशत की सांद्रता से अधिक)
5.	फॉस्फोरिक एसिड (H_3PO_4).
6.	हाइड्रोफ्लूओरिक एसिड (HF)
7.	परक्लोरिक एसिड ($HClO_4$)
8.	फॉर्मिक एसिड (भार में 10 प्रतिशत की सांद्रता से अधिक)
9.	हाइड्रोसायनिक एसिड, उन पदार्थों को छोड़कर जिनका भार हाइड्रोसायनिक एसिड के भार में 0-1 प्रतिशत भार से कम हो।
10.	हाइड्रोक्लोरिक एसिड, उन पदार्थों को छोड़कर जिनका भार हाइड्रोक्लोरिक एसिड के भार में 5 प्रतिशत भार से कम हो।
11.	नाइट्रिक एसिड, उन पदार्थों को छोड़कर जिनका भार नाइट्रिक एसिड के भार में 5 प्रतिशत भार से कम हो।
12.	ऑक्जेलिक एसिड
13.	मरक्यूरिक परक्लोराइड (संक्षारक सबलिमेट)
14.	पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड, उन पदार्थों को छोड़कर जिनका भार पोटेशियम हाइड्रॉक्साइड के भार में 2 प्रतिशत भार से कम हो।
15.	सोडियम हाइड्रॉक्साइड, उन पदार्थों को छोड़कर जिनका भार सोडियम हाइड्रॉक्साइड के भार में 2 प्रतिशत भार से कम हो।
16.	हाइड्रोजन पेरोक्साइड (भार में 50 प्रतिशत से अधिक की सांद्रता)
17.	फॉर्मलडीहाइड (भार में 25 प्रतिशत से अधिक की सांद्रता)
18.	फिनॉल (भार में 3 प्रतिशत से अधिक की सांद्रता)
19.	सोडियम हाइपोक्लोराइट सॉल्यूशन (भार में 5 प्रतिशत से अधिक की सांद्रता)
20.	श्वेत आरसनिक



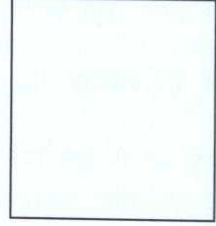
(एस0 रामास्वामी)
प्रमुख सचिव

प्रपत्र 1

[उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली, 2014 का नियम 4 देखें]

विष के कब्जे व विक्रय के लिए अनुज्ञप्ति

निम्न बक्से में आवेदक 3x2.5 सेमी के आकार का फोटोग्राफ चिपकाएंगे जिस पर अनुज्ञापन प्राधिकारी की मुहर के साथ उसके हस्ताक्षर इस प्रकार से हों कि आधे फोटोग्राफ पर तथा शेष आधे अनुज्ञप्ति प्रपत्र पर अंकित हों।



1. पंजिका संख्या
2. अनुज्ञप्ति धारक का नाम
3. दुकान का स्थान
4. श्री.....पुत्र श्रीजो पुलिस थाना
जिला.....अधीनमें (स्थानीय निकाय का नाम)
के रूप में व्यापार संचालित कर रहे हैं, को एतद् द्वारा

निम्नलिखित विष के खुदरा विक्रय के कब्जे व उनके खुदरा विक्रय के अनुज्ञप्ति प्रदत्त की जाती है :-

- (1)
- (2).....
- (3).....
- (4).....
- (5).....

(क) यह अनुज्ञप्ति पिछले पृष्ठ पर विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन है, जिनके किसी भी प्रकार से उल्लंघन होने पर अनुज्ञप्ति जब्त हो जाएगी और साथ ही विष अधिनियम, 1919 की धारा 6 में प्रावधानित शास्तियां अधिरोपित की जाएंगी।

(ख) यह अनुज्ञप्ति इसके प्रदत्त किए जाने की तिथि से 5 वर्ष की अवधि तक प्रवृत्त रहेगा, जब तक कि यह पहले ही अनुज्ञप्ति धारक की मृत्यु के कारण पर्यवसान या अनुज्ञप्ति प्राधिकारी द्वारा निरस्त अथवा प्रतिसंहरित न कर दी जाए।

अनुज्ञापन प्राधिकारी की मुहर व हस्ताक्षर

शर्तें

- (1) नियम 5 व 8 के प्राविधानों के अधीन प्रदत्त या नवीनीकृत अनुज्ञप्ति निर्गत किए जाने की तिथि से पांच वर्ष की अवधि के लिए प्रवृत्त होगी। अनुज्ञप्ति लेने या नवीनीकरण के इच्छुक आवेदक अनुज्ञापन प्राधिकारी को सौ रुपये के मूल्य के न्यायालय शुल्क के स्टॉप को संलग्न कर लिखित में आवेदन करेगा।
- (2) अनुज्ञप्ति धारक की मृत्यु होने या उसके व्यापार के अंतरित होने पर, या यदि अनुज्ञप्ति धारक फर्म या कंपनी हो तो उस फर्म या कंपनी के समापन पर या उसके द्वारा किए जा रहे व्यापार के अंतरण की दशा में अनुज्ञप्ति का पर्यवसान हो जाएगा।
- (3) किसी भी पर्याप्त कारण से अनुज्ञापन प्राधिकारी किसी अनुज्ञप्ति को प्रतिसंहरित या निरस्त कर सकता है।
- (4) विष का प्रत्येक विक्रय, यथासंभव रूप से अनुज्ञप्ति धारक द्वारा व्यक्तिगत रूप से या जहां अनुज्ञप्ति धारक फर्म या कंपनी हो, वहां उस फर्म या कंपनी के अधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से या उसके पर्यवेक्षण में किया जाएगा।
- (5) कोई अनुज्ञप्ति धारक, किसी अकेले व्यक्ति को तब तक किसी प्रकार के विष का विक्रय नहीं करेगा जब तक कि वह व्यक्ति साक्षी के रूप में कम से कम एक साथी के साथ उपस्थित न हो जो विष के क्रय का उद्देश्य बता सके। अनुज्ञप्ति धारक क्रेता को व्यक्तिगत रूप से जानता हो या उसके द्वारा प्रस्तुत फोटोयुक्त पहचान पत्र, जिसमें उसका पता अंकित हो या किसी अन्य दस्तावेज पर उसका पता दर्ज हो, के माध्यम से उसकी पहचान संतोषजनक रूप से करे। साथ ही वह किसी भी विष के विक्रय से पूर्व क्रेता तथा साक्षी के नाम, दूरभाष संख्या तथा पता भी अभिनिश्चित करेगा और विष के क्रय के उद्देश्य का भी पता करेगा। वह किसी भी ऐसे व्यक्ति को विष का विक्रय नहीं करेगा जो उसे 18 वर्ष से कम की आयु का प्रतीत होता हो या जिसका अपने मन व शरीर पर पूर्ण नियंत्रण न होना प्रतीत होता हो।
- (6) प्रत्येक अनुज्ञप्ति धारक एक पंजिका का अनुरक्षण करेगा जिसमें वह सिवाय ऐसे विष के विक्रय के जो किसी अहर्ता-प्राप्त चिकित्साधिकारी या पशु-चिकित्साधिकारी के औषधि निर्देश (प्रिस्क्रिप्शन) के अनुसरण में किसी रसायनज्ञ, दवा-विक्रेता या औषध-संयोजक द्वारा प्रयुक्त, वितरित या सुमिश्रित किया जाए, विष के सभी प्रकार के विक्रय को प्रविष्ट करेगा। ऐसी पंजिका में प्रत्येक विक्रय के विषय में निम्न विवरण प्रविष्ट किए जाएंगे—
 - (क) क्रम संख्या,
 - (ख) विक्रय की तिथि,
 - (ग) क्रेता का नाम, दूरभाष संख्या व पता,
 - (घ) विष का नाम,
 - (ङ.) विक्रित मात्रा,
 - (च) अपेक्षित विष के क्रय हेतु क्रेता द्वारा बताया गया प्रयोजन,
- (छ) क्रेता के हस्ताक्षर या निरक्षर हो तो निशानी अंगूठा या डाक द्वारा क्रय की दशा में, पत्र अथवा लिखित आदेश की तिथि तथा उस मूल पत्रावली का संदर्भ जिसमें वह सुरक्षित रखा गया है,
- (ज) क्रेता की पहचान करने वाले साक्षी के हस्ताक्षर या निरक्षर हो तो निशानी अंगूठा तथा उसके द्वारा प्रस्तुत फोटो पहचान पत्र तथा पहचान पत्र निर्गत करने वाले प्राधिकारी का नाम,
- (झ) क्रेता तथा साक्षी का डिजिटल फोटो
- (ञ) व्यवहारी के हस्ताक्षर,
- (7) पंजिका के पृथक भाग में प्रत्येक विष के लिए पृथक स्तंभ में प्रतिदिन विक्रित विष की मात्रा को प्रविष्ट किया जाएगा तथा इन प्रविष्टियों को प्रत्येक दिन भरा जाएगा।
- (8) उप नियम (2) के अधीन मद (छ) में संदर्भित हस्ताक्षर स्वयं अनुज्ञप्तिधारक के या जहां अनुज्ञप्ति धारक कोई फर्म या कंपनी हो, हस्ताक्षर ऐसी फर्म या कंपनी के अधिकृत

- प्रतिनिधि के होने चाहिए तथा विक्रय के समय या माल प्रेषण करते समय अंकित किए जाने चाहिए। ऐसे हस्ताक्षरों से यह इंगित माना जाएगा कि हस्ताक्षकर्ता ने इस बात की संतुष्टि कर ली है कि नियम 15 की अपेक्षाओं को पूर्ण कर लिया गया है।
- (9) नियम 15 के उप नियम (2) के अधीन मद (छ) में संदर्भित सभी पत्र या लिखित आदेश अनुज्ञप्ति धारक द्वारा मूल रूप में विक्रय की तिथि से न्यूनतम दो वर्षों की अवधि के लिए सुरक्षित रखे जाएंगे।
- (10) अनुज्ञप्ति धारक प्रत्येक विष से संबंधित स्टॉक पंजिका अनुरक्षित करेगा जिसमें निम्न विवरण होंगे—
- (क) क्रम संख्या
 - (ख) तिथि
 - (ग) प्राप्त मात्रा
 - (घ) जिस व्यक्ति से प्राप्त किया, उसका नाम व पता
 - (ङ.) विक्रित मात्रा
 - (च) स्टॉक की अतिशेष मात्रा,
 - (छ) टिप्पणी
- (11) प्रत्येक अनुज्ञप्ति धारक नियम 16 के उप नियम (2) के प्राविधानों के अनुरूप विवरणों की सूचना स्थानीय पुलिस थाने में देगा,
- (12) पंजिका में प्रतिदिन के अतिशेष स्टॉक का विवरण प्रविष्ट किया जाएगा,
- (13) कोई कार्यकारी मजिस्ट्रेट या संबंधित पुलिस थाने के उप-निरीक्षक के स्तर का या उससे उच्च अन्य कोई पुलिस अधिकारी या राज्य सरकार द्वारा नियुक्त कोई चिकित्साधिकारी या औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 (वर्ष 1940 की अधिनियम संख्या 23) की धारा 21 के अधीन नियुक्त कोई निरीक्षक किसी भी समय अनुज्ञप्ति धारक के उस स्थल में प्रवेश और निरीक्षण कर सकेगा जहां पर विषों को विक्रय हेतु रखा गया है और वहां पर स्थित सभी प्रकार के विषों व नियम 15 एवं 16 के अधीन अनुरक्षित पंजिकाओं का निरीक्षण कर सकेगा।
- (14) नियमावली के अधीन विक्रय के लिए रखे गए सभी विष सिवाय किसी रसायनज्ञ या दवा विक्रेता द्वारा किसी चिकित्सक या पशु चिकित्सक के औषधि निर्देश (प्रिस्क्रिप्शन) के आधार पर जारी या तैयार करने के लिए रखे गए विषों के) किसी बक्से, अलमारी, कक्ष या भवन (रखी गई मात्रा के अनुसार) ताला और चाबी द्वारा सुरक्षित रखे जाएंगे तथा जिनमें अधिनियम के अधीन प्रदत्त अनुज्ञप्ति के अनुसार रखे गए विष के अतिरिक्त कोई पदार्थ नहीं रखा जाएगा तथा प्रत्येक विष को पृथक रूप से शीशे, प्लास्टिक, धातु या मिट्टी के बंद पात्रों में सुरक्षित रूप से रखा जाएगा। ऐसे प्रत्येक बक्से, अलमारी, कक्ष या भवन को तथा प्रत्येक ऐसे पात्र को लाल अक्षरों के साथ अंग्रेजी में “POISON” तथा स्थानीय भाषा में “विष” अंकित किया जाएगा।
- (15) जब भी किसी विष का विक्रय किया जाए, उसे एक बंद पात्र या कंटेनर (मात्रा के अनुसार) में अनुज्ञप्ति धारक द्वारा सुरक्षित रूप से पैक किया जाएगा तथा उस पर लाल लेबल लगाया जाएगा जिसमें अंग्रेजी व स्थानीय भाषा में विष का नाम और अनुज्ञप्ति धारक का नाम एवं पता तथा उत्तराखंड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली, 2014 के नियम 16 के अधीन विनिर्दिष्ट पंजिका में प्रविष्ट प्रविष्टि संख्या तथा तिथि अंकित किये जाएंगे।
- (16) अनुज्ञप्ति उपरोक्त शर्तों तथा अधिनियम व उसके अंतर्गत समय समय पर बनाए गए किसी भी नियम के अधीन मानी जाएगी।
- (17) अनुज्ञप्ति धारक यदि चिकित्सीय उपयोग हेतु किसी भी विष को कब्जे में रखने या विक्रय करने की मंशा रखता है तो उसे सर्वप्रथम औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के प्राविधानों के अंतर्गत अपेक्षित अनुज्ञप्ति को अभिप्राप्त करना होगा।

नोट— चिकित्सीय उपयोग हेतु विष से अभिप्राय औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 की धारा 3 में परिभाषित किसी विष से है।

प्रपत्र- 2

[उत्तराखण्ड विष (कब्जा एवं विक्रय) नियमावली, 2014 का नियम 6 देखें]

अनुज्ञप्ति प्रदत्त किए जाने अथवा उसके नवीनीकरण हेतु आवेदन पत्र

आवेदन पत्र के साथ **3x2.5** सेमी आकार के दो हालिया फोटो जो किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा पिछले हिस्से में विधिवत रूप से अनुप्रमाणित हों संलग्न करना आवश्यक है। इनमें से एक नीचे दिए गए बक्से में चिपकानी होगी।

1. आवेदक या फर्म का नाम
2. आवेदन का उद्देश्य
3. स्थिति-व्यक्तिगत / पंजीकृत / गैर पंजीकृत कंपनी / फर्म
4. आयु (केवल व्यक्तियों के लिए)
5. डाक का पता (पंजीकृत कार्यालयों का पता तथा पिनकोड, यदि आवेदक कंपनी हो तो उसके प्रमुख कार्यालय का पता)
 - (i) दूरभाष संख्या ;
 - (ii) तार का पता;
 - (iii) ई-मेल;
6. परिसर / व्यवहार का पता
 - (i) राज्य,
 - ii) जिला,
 - iii) नगर अथवा गांव का नाम
 - iv) गृह संख्या
 - (v) नगर निकाय की प्लॉट संख्या,
 - (vi) संबंधित पुलिस थाना,
 - (vii) रेलवे स्टेशन,
7. विषों की मात्रा जिसका क्रय तथा भंडारण प्रस्तावित है,
8. अनुज्ञप्ति संख्या..... व जारी करने की तिथि
(नवीनीकरण के मामले में),
9. विष की मात्रा जो पूर्व से रखी गई हो, यदि कोई हो _____
10. आवेदन के साथ पूर्व में निर्गत अनुज्ञप्ति संलग्न की जानी चाहिए।
मैं प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त सूचनाएं मेरी जानकारी व विश्वास के अनुसार सही हैं।

स्थान
तिथि

आवेदक के हस्ताक्षर
पदनाम / स्थिति
डाक का संपूर्ण पता